

Çāk. Ch. 63, 6. Spr. 2324. RĀGA-TAR. 3, 198. ÇUK. in LA. (II) 37, 18. ऋषेषु मूढः Spr. 4780. PAÑKĀT. 243, 18 (wo wohl चतुर्थो ऋषेषु मूढः zu lesen ist). व्यापकमानयोर्मूढा भेदे सदशयोस्तयोः BHATT. 6, 119. die Ergänzung im comp. vorangehend: प्रतिपत्ति° Çiç. 9, 77. इतिकर्तव्यता° Hit. 43, 10. विचार° RAGH. 2, 47. Hit. 136, 10. Vgl. अग्नि°, दिङ्मूढ. — c) besinnungslos, ohnmächtig; = मूर्च्छित AK. 3, 4, 14, 85. H. an. 3, 287. MED. t. 143. = विचेष्ट TRIK. 3, 3, 118. = तन्द्भित H. an. 2, 130. MED. dh. 3 (तन्द्भित gedruckt). — d) dumm, thöricht, einfältig AK. 3, 1, 48. 3, 4, 26, 97. TRIK. H. 352. H. an. MED. HALĀJ. 2, 181. M. 3, 249. 7, 30. MBH. 3, 2250. 3030. 15698. 5, 6004. fg. (मूढवत्). R. 1, 53, 27. 60, 17. 3, 53, 20. KUMĀRAS. 6, 55. VIKR. 32, 15. Spr. 390. 1327. 1833. 2364. 2846. 3022. 3636. 4539. 4567. 4732. 5106. 5356. VARĀH. BRH. 24, 2. VID. 70. 110. KATHĀS. 3, 52. 39, 192. 49, 12. 152. मूढा° 61, 18. PAÑKĀT. 38, 12. मूढतम Spr. 1693. 4888. — e) Verwirrung hervorruhend, verwirrend: विशेषाः शास्ता घोरश्च मूढश्च (= मोहनजनकाः GAUDAP.) SĀMĀKHAJ. 38. VP. bei MUIR, ST. 4, 34. नास्ति विशेषः शास्तघोरमूढत्वादिद्वयो यत्र Schol. zu KAP. 3, 1. — f) Bez. einer Stufe im Joga: व्युत्थानं नित्तमूढवित्तित्ताद्यं भूमित्रयम् Verz. d. Oxf. H. 229, a, 41. — g) m. pl. Bez. der Elemente im SĀMĀKHAJ. TATTVAŚ. 16. — h) त्रिमूढ und त्रिमूढक n. eine best. Art der Posse BHĀR. NĀTĀÇ. 18, 118. 123. — मूढ wohl fehlerhaft für मूत् सुÇR. 1, 158, 13, für मुण्ड 2, 510, 6. Vgl. मूढामूढ, मौढ.

— caus. irre machen, verwirren, des klaren Bewusstseins berauben, bethören; in Unordnung bringen. मोहयति, अमूहकत्, मोमुहकत् RV. 10, 162, 6. चित्तानि AV. 3, 2, 2. द्यान्वाणि 9, 8, 17. यज्ञम् ÇAT. BR. 3, 2, 3. 1. 14, 3, 4, 13. प्राणादनि 4, 1, 2, 19. 8, 4, 4, 2. 11, 3, 5, 13. 13, 2, 1, 7. मादेवानां मोमुहद्भागधेयम् ĀÇV. ÇR. 8, 14. KĀTH. 23, 8. तां ते संपदं मोहयति ÇĀNKH. BR. 23, 4. KAUC. 125. — स तु तं पितरं दृष्ट्वा मोहयामास मायया MBH. 1, 3995. शरज्ञालेन मूढता मोहयन्कार्षीं चमूम् 5457. 3, 2794. 12153. 12990. 4, 266. 13, 534. R. 6, 7, 6. Spr. 933. 3396. KATHĀS. 37, 58. 39, 168. 72, 342. RĀGA-TAR. 3, 137. MĀRK. P. 81, 66. व्यामिश्रेणैव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे BHAG. 3, 2. मुनीनां मोहयन्मनः PAÑKĀR. 1, 14, 56. med. MĀRK. P. 31, 77. मोहित MBH. 1, 1153. 3, 2287. fg. 2360. 13, 534. DAÇ. 1, 12. R. 3, 49, 30. Spr. 1732. किं कर्म किमकर्मेति कवयो ऽप्यत्र मोहिताः BHAG. 4, 16. ब्रह्मणः पदे HARIV. 11610. दुःखेन MBH. 3, 2774. राव्यलेभेन R. 2, 72, 14. मद° M. 11, 96. विश्यामित्रास्त्र° R. 1, 55, 1. काम° MBH. 1, 7728. R. 1, 1, 44. 2, 18. 3, 53, 22. लोभ° Spr. 3280. इक्षित्नेह° KATHĀS. 44, 110. अम° MBH. 3, 2964. 15685. RĀGA-TAR. 3, 352. 374. यथाघानं मोहयन्ते भयाय den Weg verirren so v. a. auf einen Abweg führen MBH. 3, 1776.

— intens. in grosser Verwirrung sein: मोमुह्यमाना MBH. 3, 402, 4, 801. — Vgl. मोमुघ.

— व्यति, partic. °मूढ überaus verwirrt: इन्द्रियैर्व्यतिमूढात्मा HARIV. 11610.

— अनु nach —, mit Jmd verwirrt werden, — die klare Einsicht verlieren: मुह्यन्तं चानुमुह्यामि दुर्योधनमचेतनम् MBH. 1, 143.

— अग्नि ohnmächtig werden सुÇR. 2, 473, 9.

— व्या, partic. °मूढ verwirrt, bethört, irre geleitet RĀGA-TAR. 3, 165. 4, 609. Vgl. व्यामोह. — caus. verwirren, bethören, irre leiten, bezaen: व्योमहयन्तं मां तत्र निपतत्यो (धाराः) ऽनिशं भुवि MBH. 3, 12138. 8, 1197.

Schol. zu BHATT. 8, 63. °मोह्य KULL. zu M. 2, 213. 9, 290. घनान्धकार-व्यामोहित PAÑKĀT. 129, 8. कृतकवचनव्यामोहितचित्त 199, 1. ed. orn. 41, 18.

— उद्, partic. उन्मुघ irre geworden SIDDH. K. zu P. 1, 1, 28. — Vgl. उन्मुह.

— निम् caus. verwirren: अथो प्राणान्प्राणिनामत्काले कामक्रोधौ प्राप्य (= प्राप्य Schol.) निर्मोह्य कृत्ति MBH. 12, 9223.

— विनिम् in विनिर्मूढप्रतिज्ञ MĀRK. P. 132, 34, wo aber वि° in वि + निर्मूढ haud irritus zu zerlegen ist.

— परि irre —, verwirrt werden, irren, fehl gehen (in übertr. Bed.): इदं तु चित्तयन्नेवं परिमुह्यामि केवलम् MBH. 4, 1404. 14, 40. med.: स्वभावमेके कवयो वदन्ति कालं तथान्यो परिमुह्यमानाः ÇVETĀÇV. Up. 6, 1. तत्र मे बुद्धिरत्रैव विषये (so die ed. Bomb. st. विमर्षे) परिमुह्यते (am Ende eines Çloka!) MBH. 13, 5682. R. 4, 16, 50. partic. °मूढ verwirrt: तव स्पर्शे स्पर्शे मम हि परिमूढेन्द्रियगणः UTTARARĀMAK. 17, 4. Vgl. परिमोहित्. — caus. med. P. 1, 3, 89. VOP. 23, 58. verwirren BHATT. 8, 63. act.: राजानं परिमोह्य R. GORR. 2, 8, 52. कर्माणि KAUC. 135. किं नु स्वदेत-त्पततीति सर्वे वितर्कयन्तः परिमोहिताः स्मः MBH. 1, 3571. 12, 450. °मानसा R. 3, 66, 15. तत्र संवत्सरं पूर्णं ब्रह्म परिमोहिताः । गङ्गा शिरसि देवस्य विमृता वेगवाहिनी ॥ R. GORR. 1, 43, 8. स्मृतिमत्तो ऽत्र चत्वार-स्त्रयस्तु परिमोहिताः kein klares Bewusstsein habend HARIV. 1233. Vgl. परिमोहन.

— प्र verwirrt werden, das klare Bewusstsein verlieren: अन्त्यामन्यो धनावस्थो प्राप्य विशेषिको नराः । अस्तुष्टाः प्रमुह्यन्ति संतोषं याति पण्डिताः ॥ Spr. 3302. ohnmächtig werden सुÇR. 1, 233, 10. MBH. 1, 996. partic. 1) °मुघ a) kein klares Bewusstsein habend, ohnmächtig UTTARARĀMAK. 122, 3. MĀLATĪM. 149, 7. — b) überaus reizend (vgl. मुघ) PAÑKĀR. 3, 10, 17. — 2) °मूढ verwirrt, kein klares Bewusstsein habend MBH. 13. 3083. अस्त्रतेजः° HARIV. 10708. MBH. 1, 6467. 3, 15680. UTTARARĀMAK. 118, 7. °संज्ञ R. 2, 83, 19. प्रमूढो ऽभूत्प्रज्ञासर्गे MBH. 3, 12801. bethört, thöricht MUND. Up. 1, 2, 10. Spr. 1493. प्रमूढं भुवनं भृशम् aus seinen Fugen gekommen MBH. 3, 14573. Vgl. प्रमोह. — caus. verwirren, des klaren Bewusstseins berauben MBH. 3, 14573. °मोहित 15687. 6, 2535. Vgl. प्रमोहन fg.

— विप्र caus. in Verwirrung bringen: ततः सर्वा दिशो राजन्सायकै-र्विप्रमोहयन् MBH. 8, 3162. °मोहित verwirrt, kein klares Bewusstsein habend 1, 5978.

— संप्र in Verwirrung gerathen MBH. 3, 2612. 12, 2440. तस्यात्मा संप्रमुह्यते sich verfinstern Spr. 5183. partic. °मूढ verwirrt, in Verwirrung gerathen MBH. 3, 1869. ततः सर्वं भवति संप्रमूढम् 12, 2786. Vgl. संप्रमोह. — caus. Jmd verwirren, des klaren Bewusstseins berauben MBH. 13. 3083. R. 3, 63, 9.

— प्रति caus. verwirren AV. 3, 2, 5 (प्रतिलोभयन्तो RV.).

— वि in Verwirrung gerathen, das klare Bewusstsein verlieren: क्रोधमेतद्विमुह्यामः सदेवासुरमानवम् । जगदुद्धूतमात्मा च कथं तस्मिन्वदस्व नः ॥ JĀG. 3, 118. BHAG. 2, 72. R. 2, 23, 12. यावदेव मे चेतो न विमुह्यति R. GORR. 2, 3, 20. 3, 68, 55. सुÇR. 2, 464, 4 (ohnmächtig werden). मुनयो ऽपि विमुह्यन्ति KATHĀS. 20, 134. BHĀG. P. 1, 10, 10. भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कार्कचित् 2, 9, 36. 5, 13, 7. Verz. d. Oxf. H. 29, a, 24.